International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 7.972 Volume 11, Issue 8, August 2024
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में शिशु पालन पद्धतियों का सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक पृष्ठभूमि का तुलनात्मक अध्ययन

SUSHMA SURESH JAJU
Research Scholar Shri JJT University
Dr. Savita Sangwan
Research Supervisor & Associate Professor,
Department of Humanities & Social Sciences,
Shri JJT University, Jhunjhunu, Rajasthan

सार

बच्चों को खिलाने की प्रथाएँ और पालन–पोषण की शैलियाँ बच्चों की वृद्धि और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये प्रथाएँ सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय कारकों से काफी प्रभावित होती हैं, जो अक्सर ग्रामीण और शहरी पद्धति के बीच काफी भिन्न होती हैं। इस शोध का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा अपनाए जाने वाले शिशु पालन–पोषण और पालन विधियों की वर्तमान स्थिति एवं उनके प्रभाव का विश्लेषण करना है। अध्ययन में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत महिलाओं की भूमिका, जिम्मेदारियां और दृष्टिकोण की तुलना की गई है। प्रस्तुत अध्याय शोध का निष्कर्ष खण्ड के अन्तर्गत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों की विवेचना की गयी है। इस शोध के अन्तर्गत कुल 200 नवविवाहितों का चयन किया गया है। 100 ग्रामीण क्षेत्र एवं 100 शहरी क्षेत्र से है। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध मुंबई महानगर के नगरीय तथा ग्रामीण परिक्षेत्र के कुछ बालकों के व्यक्तित्व निर्माण एवं सामाजिक उत्थान पर शिशु पालन पद्धतियों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए अभिकल्पित किया गया था, जिसके उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिशु–पालन पद्धतियों का विहंगम अध्ययन करना है। शहरी बच्चों में स्तनपान की प्रथा ग्रामीण बच्चों की तुलना में बेहतर पाई गई।

कीवर्ड– ग्रामीण, शहरी, पालन, शिशु, महिला

1. प्रस्तावना

स्वास्थ्य मानव जीवन की एक अनमोल सम्पत्ति है। मनुष्य के जीवन और उसकी खुशी के लिए स्वास्थ्य से ज्यादा महत्वपूर्ण किसी अन्य वस्तु की कल्पना कर पाना कठिन है। मानव जीवन में स्वास्थ्य के महत्व को स्वीकारते हुए संविधान में इसे राज्य सूची में शामिल किया गया है। यहाँ राज्य का यह दायित्व है कि सार्वभौम स्वास्थ्य सेवाओं तक सबकी पहुंच हो तथा भुगतान असामर्थ्यता की वजह से किसी को भी स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित न होना पड़े। सामान्यतः स्वास्थ्य से तात्पर्य बीमारियों से मुक्त होने से समझा जाता है, परन्तु वैज्ञानिक दृष्टि से इसे स्वस्थ नहीं कहा जाता है। स्वस्थ होने का तात्पर्य "शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति से है।" अर्थात व्यक्तियों की वह सामान्य स्थिति जिसमें वह बिना किसी परेशानी के अपनी कार्य –क्षमता का पूरा प्रयोग कर सके तथा उसे व्यक्तियों को हम स्वस्थ कह सकते हैं। बच्चों की संवृद्धि भविष्य में किसी भी समाज के सबसे बड़े संसाधन की संवृद्धि का सूचक है। बच्चों के कुपोषण तथा खराब स्वास्थ्य का सामाजिक परिणाम, न केवल उच्च मृत्युदर होता है वरन् जीवित रहने वाले बच्चों में, लम्बे समय तक कमियों के रुप में विद्यमान रहता है। पूरा इतिहास देखें तो रोग, मंद विकास तथा संवृद्धि का मुख्य कारण बाल्यावस्था के सामान्य संक्रमण तथा पोषण सम्बन्धी कमियों के बीच संक्रियाशीलता रही है।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

शिशु देखभाल का अर्थ है शिशु के स्वास्थ्य को ठीक रखना तथा उसका उचित रुप से विकास करना। जन्म के पश्चात् जिन शिशुओं के देखभाल सावधानीपूर्वक की जाती है, वहीं बच्चें भविष्य में स्वस्थ शरीर व मस्तिष्क वाले होनहार नागरिक सिद्ध होते है। शिशु के देखभाल की दृष्टि से हमारे प्राचीन व आधुनिक पद्धति में पर्याप्त अन्तर मिलता है। हमारा आधुनिक युग विज्ञान का युग है जिसमें माता तथा शिशु स्वास्थ्य देखभाल के लिए आधुनिक खोजों के आधार पर प्राप्त ज्ञान का सहारा लिया जाता है, परिणामस्वरुप उनके स्वास्थ्य पर अपेक्षतया उत्तम प्रभाव पड़ता है। पुरानी पद्धति के अनुसार शिशु के देखभाल के अन्तर्गत स्वास्थ्य, स्वच्छता, रोगी से बचाव व सुपोषण आदि के बजाय माता व पारिवारिक सदस्यों की ममता का हाथ अधिक होता था।

2. सम्बंधित साहित्य

माजगांवकर, सुरभि और करंडे, विशाल और सदावर्ते, दीपिका (2024) इष्टतम शिशु और छोटे बच्चे को खिलाने (आईवाईसीएफ) की प्रथाएं 2 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के समग्र स्वास्थ्य, विकास और पोषण की स्थिति में सुधार करती हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य मुंबई की एक शहरी झुग्गी बस्ती में रहने वाले 6–23 महीने की उम्र के बच्चों के पूरक आहार प्रथाओं और पोषण की स्थिति का आकलन करना है। कार्यप्रणाली यह अध्ययन समुदाय–आधारित, क्रॉस–सेक्शनल अध्ययन था, जो शहरी स्वास्थ्य और प्रशिक्षण केंद्र, सामुदायिक चिकित्सा विभाग, सेठ जीएसएमसी और केईएमएच के क्षेत्र अभ्यास क्षेत्र में सैंपल साइज 140 था। आहार की अपर्याप्तता बच्चे के कम वजन की स्थिति, अस्वास्थ्यकर भोजन की खपत और पूरक आहार के लिए परामर्श की कमी से महत्वपूर्ण रूप से जुड़ी हुई पाई गई। निष्कर्ष अधिकांश बच्चों में आहार विविधता और आहार पर्याप्तता असंतोषजनक थी। स्टंटिंग का उच्च प्रचलन देखा गया।

वसीम, समीना और खान, रोजिना और शरीफ, सबा। (2023) यह आवश्यक है कि माता–पिता अपने बच्चे की स्वास्थ्य स्थिति और प्रतिरक्षा के लाभ के लिए उचित आहार प्रथाओं के बारे में जागरूक हों। इस प्रकार, समय–समय पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए ताकि दिए गए समय और परिदृश्य में माता–पिता की जागरूकता का पता लगाया जा सके ताकि माता–पिता को स्वस्थ आहार प्रथाओं के बारे में शिक्षित करने के लिए आवश्यक हस्तक्षेप किए जा सकें। उद्देश्यरू रहीम यार खान के कुछ ग्रामीण और शहरी इलाकों में बच्चों (तीन साल से कम उम्र के) की माताओं द्वारा वर्तमान में किए जाने वाले आहार प्रथाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करना। 35 वर्ष से कम उम्र की 213 युवा माताओं का क्रॉस सेक्शनल सर्वेक्षण, जिनके पास कम से कम एक बच्चा 3 साल से कम उम्र का है, जो शेख जायद अस्पताल रहीम यार खान के बाल रोग आउटडोर, स्त्री रोग आउटडोर और टीकाकरण केंद्र में आए थे। इसके अलावा एक तरफ 80ः प्रोटीन स्रोतों की विविधता को शामिल करने का अभ्यास कर रहे थे और लगभग 100ः फल खाने में विश्वास करते थे, लेकिन साथ ही 50ः से अधिक को हिस्से के आकार का पता नहीं था और लगभग 100ः प्रोसेस्ड या फास्ट फूड खाने की इजाजत दे रहे थे। ये आँकड़े माताओं के लिए व्यापक शैक्षिक कार्यक्रमों पर जोर देते हैं।

चौहान, रोहित और नैन्सी, और पूनम, पूनम। (2023) विभिन्न सैद्धांतिक मॉडलों के अनुसार आत्म–सम्मान के माप और संबंधित परिणामों की व्याख्या में कुछ भिन्नताएँ हैं। हालाँकि, उच्च स्तर के आत्म–सम्मान को बनाए रखने के लिए सामाजिक–संज्ञानात्मक रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। इस तरह के विनियमन में, समूह से संबंधित या सामाजिक तुलना या कारणात्मक आरोपण जैसी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के माध्यम से दूसरों का महत्व सामाजिक मनोविज्ञान द्वारा दिखाया गया है। ऐसा दृष्टिकोण उचित मूल्य नियंत्रण के लिए सामाजिक और संस्थागत वातावरण के महत्व पर बल देता है और इसीलिए वयस्कता को अपनाते हुए आत्म–सम्मान के निर्माण के बारे में सोचना हित में है। नमूने की आयु सीमा 8 से 15 वर्ष थी। इस शोध में बच्चों के आत्मसम्मान पर विभिन्न पेरेंटिंग शैलियों के प्रभाव की जाँच की गई। सहसंबंध विश्लेषण का उपयोग करके यह पाया गया कि अधिकांश माता–पिता आधिकारिक पेरेंटिंग शैली का पालन करते हैं।

आर्यल, लक्ष्मी और लुकास, अमांडा और युमना, हसीब और धालीवाल, डॉली और रुबीना, गिल। (2023) शिशु पोषण वृद्धि और विकास का प्राथमिक निर्धारक है, जिसका स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) शिशु आहार के लिए दिशानिर्देश प्रदान करता है, हालांकि भौगोलिक स्थिति, संस्कृति और जैव–सामाजिक कारकों के आधार पर प्रथाएं भिन्न होती हैं। यह अध्याय दुनिया भर में वर्तमान शिशु आहार दिशानिर्देशों और सांस्कृतिक प्रथाओं पर सहकर्मी–समीक्षा और ग्रे साहित्य का व्यापक अवलोकन प्रदान करता है। निष्कर्ष विभिन्न क्षेत्रों में विशेष स्तनपान के कई कारकों और बाधाओं की ओर ध्यान

आकर्षित करते हैं। यह अध्याय भविष्य की सार्वजनिक स्वास्थ्य पहलों और अनुसंधान को सूचित करने के लिए एक बिल्डिंग ब्लॉक के रूप में काम कर सकता है। इन बाधाओं को दूर करके, हम मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार कर सकते हैं और विश्व स्तर पर शिशुओं के लिए कुपोषण और संबंधित स्वास्थ्य परिणामों के बोझ को कम कर सकते हैं।

शिमट, विएबके और केलर, हेइडी (2023) अध्ययन में पाया गया कि स्तनपान कराने वाले परिवारों ने अनुलग्नक के लिए भोजन को प्रासंगिक माना, और बोतल से दूध पिलाने वाले परिवारों ने भोजन को मुख्य रूप से आहार से जोड़ा और कोई अनुलग्नक–संबंधी कार्य नहीं किया। इसके अलावा, स्तनपान अनन्य मातृ लगाव को बढ़ावा देता है, जबकि बार–बार दूध पिलाने से कई लगाव को बढ़ावा मिलता है। नतीजतन, फीडिंग नेटवर्क सैन जोस में शहरी मध्यमवर्गीय परिवारों में बच्चे के लगाव नेटवर्क को विनियमित करता प्रतीत होता है। देखभाल करने वालों के साक्षात्कार, प्रमुख मुखबिरों के साथ साक्षात्कार, और प्रमुख मुखबिरों के साथ सदस्य की जाँच का एक त्रिकोणीकरण निष्कर्षों की वैधता का समर्थन करता है।

3. शोध प्रारूप

3.1 शोध–प्रविधि

प्रस्तुत शोध की प्रकृति वर्णनात्मक है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा वर्णनात्मक शोध प्रारुप का प्रयोग किया है, क्योंकि शोधार्थी द्वारा गॉव के सम्बन्ध में यथार्थ एवं विस्तृत तथ्यों की जानकारी प्राप्त किया गया है तथा तथ्यों के आधार पर समस्या का वर्णनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

3.2 न्यादर्श

अतः प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक सूचनाएं व्यक्तियों की अनुभूतियों, मतों एवं विचारों पर निर्भर है। इस शोध के अन्तर्गत कुल 200 नवविवाहितों का चयन किया गया है। 100 ग्रामीण क्षेत्र एवं 100 शहरी क्षेत्र से है। अतः चयनित निदर्श मुंबई नगर की माताओं व शिशुओं का सामान्यीकरण करता है।

3.3 तथ्य संकलन

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदात्रियों की शैक्षणिक स्थिति को देखते हुए अनुसूची को हिन्दी में तैयार किया गया तथा भाषा को अधिक सरल बनाया गया ताकि यह उत्तरदात्रियों को आसानी से समझ में आ सकें। मुख्यतया अनुसूची में एक ही प्रकार के प्रश्नों को रखा गया। प्रश्नों में उत्तरदात्री से उम्र ,आयु, व्यवसाय, जाति, धर्म, शिक्षा, आय लैंगिग भेदभाव, टीकाकरण तथा विभिन्न सरकारी कार्यक्रम से महिला व शिशु स्वास्थ्य में परिवर्तन व पहुंच आदि के बारे में जानकारी संग्रहित किया गया। साक्षात्कार अनुसूची तैयार करने से पहले शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र का सर्वे किया गया। द्वितीयक स्रोतों के अन्तर्गत शोध विषय से सम्बन्धित पुस्तकें, शोध ग्रन्थ, अभिलेखों, सरकारी रिपोर्ट, पत्र–पत्रिका, जनगणना प्रतिवेदन, समाचार पत्र, इण्टरनेट इत्यादि का प्रयोग किया गया है।

4. आंकड़ों का विश्लेषण

4.1 उत्तरदाताओं की सामाजिक तथा आर्थिक पृष्ठभूमि

- **अध्ययन से सम्बन्धित महिलाओं की आयु**

प्रस्तुत अध्ययन मुंबई के ग्रामीण (बस्ती) एवं नगरीय क्षेत्र के महिलाओं पर आधारित हैए जिसके अन्तर्गत नगरीय क्षेत्र के 5 शहर में से 100 महिलाओं तथा ग्रामीण क्षेत्र (बस्ती) के 100 महिलाओं का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया हैए जिनके द्वारा महिलाओं की स्थिति से सम्बन्धित सूचनाओं को एकत्रित किया गया है। व्यक्ति के अधिकारए कर्तव्यए उत्तरदायित्वए प्रभुता तथा शक्ति विभिन्नता का बोध आयु से होता है। इसलिए यहाँ पर सारणी संख्या 1 के माध्यम से इन महिलाओं की आयु को प्रदर्शित किया गया है।

सारणी संख्या 1

महिलाओं की आयु

आयु वर्ष में	ग्रामीण		नगरीय	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
21–25	40	40	35	35.2
26–35	34	34.4	37	36.8
36–45	26	25.6	28	28
योग	100	100	100	100

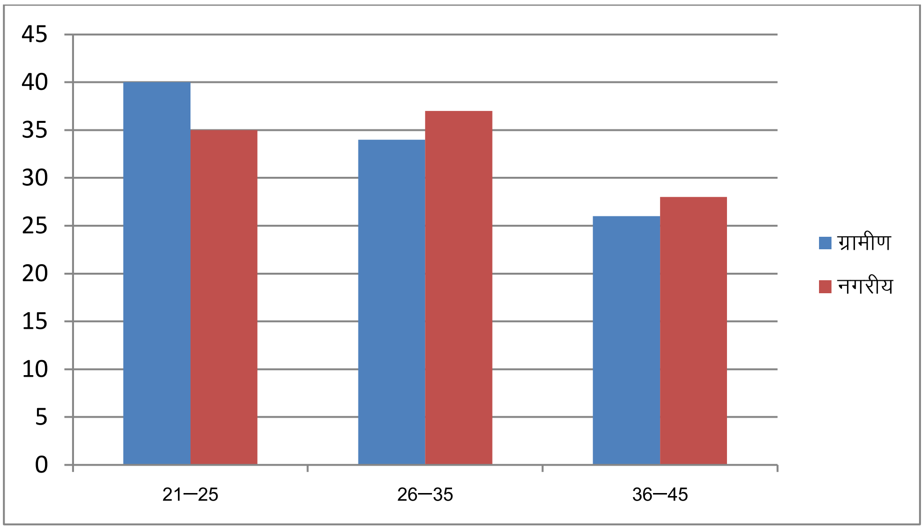

चित्र 1

महिलाओं की आयु

सारणी संख्या 1 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र की सूचना प्रदान करने वाली महिलाओं में ग्रामीण क्षेत्र की कुल 100 महिलाओं में से 40 प्रतिशत महिलाएँ 21–25 वर्ष, 34.4 प्रतिशत 26–35 वर्ष तथा 25.6 प्रतिशत महिलाएँ 36–45 वर्ष आयु वाली हैं। इसी प्रकार नगर क्षेत्र की कुल 100 महिलाओं में से 35.2 प्रतिशत 21–25 वर्ष, 36. 8 प्रतिशत 26–35 वर्ष तथा 28 प्रतिशत 36 से 45 वर्ष आयु वाली महिलाएँ सम्मिलित हैं। इस प्रकार नगर और ग्राम क्षेत्र की कुल 200 चयनित महिलाओं में से 37.6 प्रतिशत 21–25 वर्ष, 35.6 प्रतिशत 26–35 वर्ष तथा 26. 8 प्रतिशत 36–45 वर्ष की महिलाओं को सम्मिलित किया गया है ।

- **अध्ययन के लिए चयनित महिलाओं का शैक्षिक स्तर**

प्रत्येक समाज में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक प्रस्थिति के निर्धारण में शिक्षा अपनी सार्थक भूमिका निभाती है। औपचारिक शिक्षा विकास की गति का निर्धारण करती है। इन्हीं तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए अध्ययन से सम्बन्धित महिलाओं का शैक्षिक स्तर जानने का प्रयास किया गया है, जिससे उनकी शैक्षिक योग्यता और उनकी शिशु पालन पद्धतियों के बीच सम्बन्ध और जागरूकता के प्रति उनके दृष्टिकोण को जाना जा सके । अध्ययन से प्राप्त तथ्यों को सारणी संख्या 2 में प्रदर्शित किया गया है।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

सारणी संख्या 2

महिलाओं का शैक्षिक स्तर

शैक्षिक स्तर	ग्रामीण महिलाएँ		नगरीय महिलाएँ	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
निरक्षर	48	48	5	5.2
हाईस्कूल से कम	21	20.8	11	11.2
हाईस्कूल	16	15.6	29	28.8
इण्टरमीडिएट	10	10.0	36	36.0
स्नातक	3	3.6	12	12.0
स्नातक से अधिक	2	2	7	6.8
योग	100	100	100	100

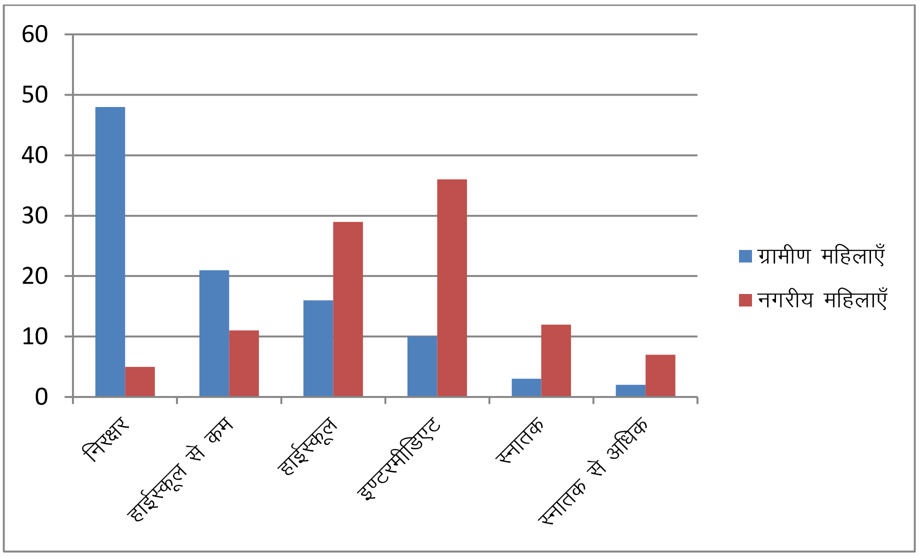

चित्र 2

महिलाओं का शैक्षिक स्तर

उपर्युक्त सारणी संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण महिलाओं की अपेक्षा नगरीय महिलाओं का शैक्षिक स्तर अधिक है। जहाँ ग्रामीण महिलाओं में निरक्षरों की संख्या अधिक है, वहीं नगरीय महिलाओं में इण्डमीडिएट और हाईस्कूल शैक्षिक स्तर अधिक है। जो यह स्पष्ट करता है कि ग्रामीण नारियों की अपेक्षा नगरीय नारियों में आज शिक्षा के मायने ही परिवर्तित हो गये हैं। आज की नगरीय नारियाँ हर प्रकार के उद्योग, कारखाने, आफिस, होटल, राजनीति, वकालत जैसे विषयों में परांगत होकर नौकरी कर रही हैं। इन महिलाओं को देखकर ग्रामीण महिलाएँ भी यह समझने लगी हैं कि शिक्षा का उनके जीवन में क्या महत्व है। ग्रामीण क्षेत्रों में जो माता–पिता बेटी को शिक्षा केवल योग्य वर से विवाह के लिए ही दिलाना चाहते हैं, उन्हें भी समझ में आने लगा है कि शिक्षा बेटी और बेटे दोनों के लिए आवश्यक है।

4.2 नगरीय तथा ग्रामीण क्षेत्रों में शिशु पालन पद्धतियों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक मान्यताएँ

सम्पूर्ण विश्व में जितने भी प्राणी जन्म लेते है, उनमें मानव ही एक ऐसा प्राणी है, जो जन्म के समय पूर्णतः असहाय होता है। शिशु के रूप में जन्में मानव को अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए माता–पिता अथवा परिवार पर ही आश्रित होना पड़ता है। यदि उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति में लेस मात्र भी असावधानी होती है, तो उसका जीवन खतरे में पड़ जाता है। अतः माता–पिता शिशु के प्रति अटूट प्रेम लिए हुए स्वयं कष्ट को सहकर शिशु के पालन–पोषण का उचित प्रबन्ध बड़े ही प्रसन्नतापूर्वक करते हैं। शिशु की देखभाल विशेष रूप से माता के द्वारा की जाती है, जिसके परिणामस्वरूप शिशु माँ के प्रति विशिष्ट अनुक्रियाओं का प्रदर्शन करता है। माता जिस प्रकार शिशु की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है उसे ही शिशु–पालन पद्धति

स्वीकार किया जाता है। शिशु–पालन–पद्धतियाँ बालक के व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं बालक के पालन–पोषण की पद्धतियाँ विभिन्न समुदाय, विभिन्न समाज, विभिन्न परिवार तथा विभिन्न संस्कृतियों में भिन्न–भिन्न होती हैं। इन्हीं पालन–पोषण की पद्धतियों पर बालक का प्रारम्भिक सामाजीकरण निर्भर करता है। बालक की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता है, जिनकी विभिन्न समुदायों में कुछ सामाजिक एवं सांस्कृतिक मान्यताएँ होती हैं। अतः बालक के पालन–पोषण की विधियों पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक मान्यताओं का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक समाज एवं संस्कृति अपने सदस्यों से एक विशिष्ट प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा करती है। इन व्यवहारों के विकास के लिए अपनाई गयी पद्धतियों का प्रभाव बालकों के व्यक्तित्व पर पड़ता है। यद्यपि शिशु के पालन–पोषण की पद्धति का आशय बालक को आवश्यकतानुसार अधिकतम सुविधाएँ प्रदान करना है, तथापि बालक के पक्वीकरण में सामाजिक एवं सांस्कृतिक मान्यताओं से कुछ न कुछ नैराश्य तथा संघर्ष अवश्य ही होता है।

4.3 नगरीय तथा ग्रामीण क्षेत्रों में शिशु पालन पद्धतियों की तुलनात्मक व्याख्या

तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत अध्याय में नगरीय तथा ग्रामीण क्षेत्रों में शिशु पालन पद्धतियों की तुलनात्मक व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है तुलनात्मक व्याख्या के लिए अध्ययन में चयनित महिलाओं से प्रश्नावली के माध्यम से निष्कर्ष प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। जिसे निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है। प्रारम्भ में शिशु का पालन माँ के स्तनपान से ही प्रारम्भ होता है। शिशु जब जन्म लेता है, तब वह बिल्कुल असहाय होता है। वह पोषक आहार के रूप में माँ के दूध पर आश्रित होता है । ऐसी स्थिति में माँ अपने शिशु को समय – समय पर स्तनपान कराती रहती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर सर्वप्रथम यह जानने का प्रयास किया गया कि ग्रामीण और नगरीय महिलाएँ अपने बच्चों को स्तनपान कितने समय पर कराती हैं। इस संदर्भ में अध्ययन क्षेत्र की महिलाओं से यह प्रश्न किया गया कि आप अपने बच्चों को स्तनपान कितने समय पर कराती हैं। इस प्रश्न के संदर्भ में प्राप्त निष्कर्षों को सारणी संख्या 3 में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी संख्या 3

अपने बच्चों को स्तनपान कितने समय पर कराती हैं

विकल्प	ग्रामीण महिलाओं की आवृत्ति	नगरी महिलाओं की आवृत्ति
जब शिशु रोता है।	60 प्रतिशत	20 प्रतिशत
दो तीन घंटे के अन्तराल पर	30 प्रतिशत	78 प्रतिशत
अनियमित	10 प्रतिशत	2 प्रतिशत

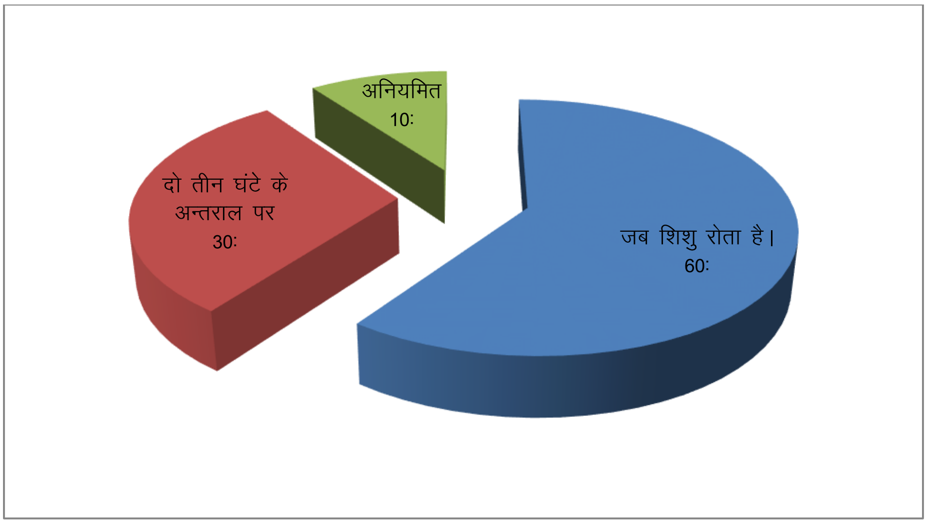

चित्र 3

अपने बच्चों को स्तनपान कितने समय पर कराती हैं

उपरोक्त सारणी संख्या 3 में प्रदर्शित आवृत्ति के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण परिवार की 60 प्रतिशत महिलाएँ शिशु के रोने पर स्तनपान कराती हैं, 20 प्रतिशत महिलाएँ दो–दो घण्टे के अन्तराल पर एवं 10 प्रतिशत महिलाएँ अनियमित अन्तराल पर अपने शिशु को स्तनपान कराती हैं, जबकि नगरीय परिवार की 20 प्रतिशत महिलाएँ शिशुओं के रोने पर, 78 प्रतिशत महिलाएं दो–दो घण्टे के अन्तराल पर तथा 2 प्रतिशत महिलाएँ अनियमित अन्तराल पर स्तनपान कराती हैं।

नगरीय व ग्रामीण महिलाओं से जब यह ज्ञात कर लिया गया कि शिशुओं को स्तनपान कब–कब कराना चाहिए, तब उनसे यह भी जानने का प्रयत्न किया गया कि शिशुओं को जन्म के कितने घण्टे पर स्तनपान कराना चाहिए। इस संदर्भ में किए गये सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्षों को सारणी संख्या 4 में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी संख्या 4

शिशुओं को जन्म के कितने घण्टे पर स्तनपान कराना चाहिए

विकल्प	ग्रामीण महिलाओं की आवृत्ति	नगरीय महिलाओं की आवृत्ति
जन्म के तत्काल बाद	48	70
जन्म के आधे घंटे बाद	22	20
जन्म के एक घंटे बाद	30	10

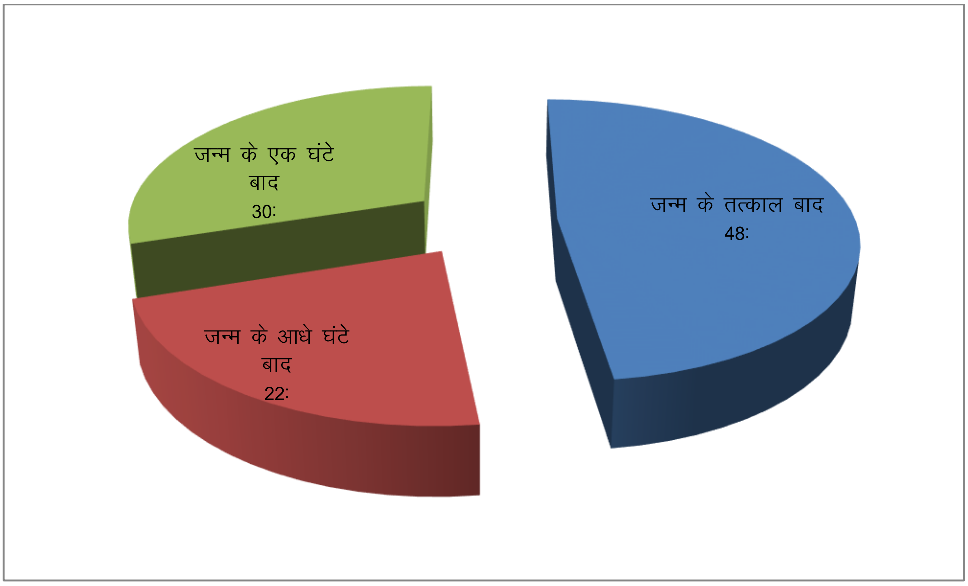

चित्र 4

शिशुओं को जन्म के कितने घण्टे पर स्तनपान कराना चाहिए

उपरोक्त सारिणी संख्या 4 में प्रदर्शित ग्रामीण एवं नगरीय महिलाओं द्वारा प्रदत्त आवृत्ति के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण परिवार की 48 प्रतिशत महिलाएँ जन्म के तत्काल बाद, 22 प्रतिशत महिलाएँ जन्म के आधे घण्टे बाद एवं 30 प्रतिशत महिलाएँ जन्म के एक घण्टे के अन्दर स्तनपान कराने पर बल देती हैं, जबकि नगरीय परिवार की 70 प्रतिशत महिलाएँ जन्म के तत्काल बाद, 20 प्रतिशत महिलाएँ जन्म के आधे घण्टे बाद एवं 10 प्रतिशत महिलाएँ जन्म के एक घण्टे के अन्दर स्तनपान कराने का समर्थन करती हैं, जो नगरीय एवं ग्रामीण महिलाओं के शिशु–पालन पद्धतियों में भिन्नता को प्रदर्शित करता है।

प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत यह भी ज्ञात करने का प्रयास किया गया कि ग्रामीण और नगरीय महिलाओं द्वारा शिशुओं को कौन सा दूध पिलाया जाता है । इसके परीक्षण हेतु महिलाओं के समक्ष तीन विकल्प माता का दूध, ऊपर का दूध तथा गाय का दूध प्रस्तुत किया गया और उनसे विकल्प चुनने को कहा गया, जिसके अन्तर्गत प्राप्त आवृत्तियों को सारणी संख्या 5 में संकलित किया गया है ।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

सारणी संख्या 5

शिशुओं को कौन सा दूध पिलाया जाता है

विकल्प	ग्रामीण महिलाओं की आवृत्ति	नगरीय महिलाओं की आवृत्ति
माता का दूध	82	22
ऊपर का दूध	7	69
गाय का दूध	11	9

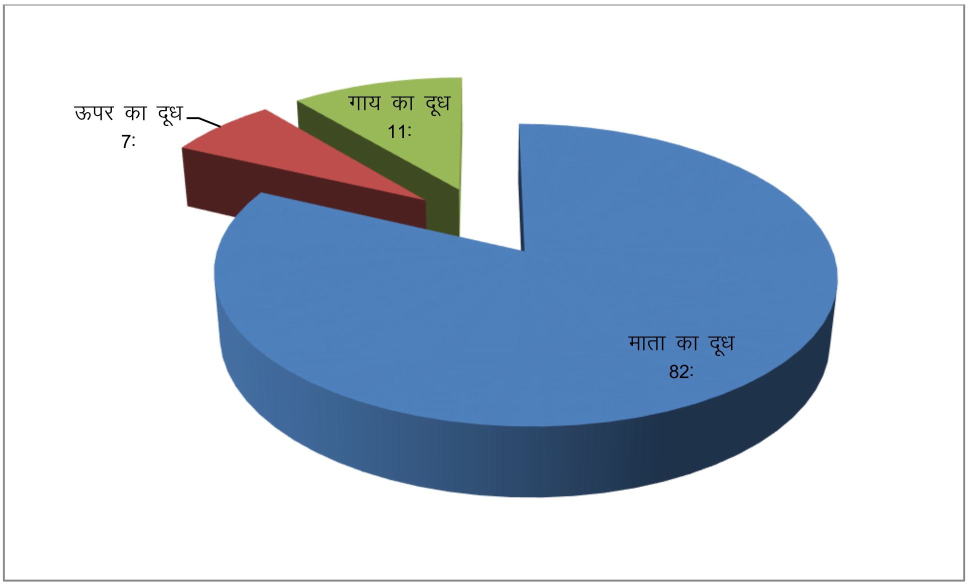

चित्र 5

शिशुओं को कौन सा दूध पिलाया जाता है

उपरोक्त सारणी संख्या 5 में प्रदर्शित ग्रामीण एवं नगरीय महिलाओं के सर्वेक्षण आवृत्ति को देखने से स्पष्ट होता है कि 82 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएँ माता का दूध, 7 प्रतिशत महिलाएँ ऊपर का दूध तथा 11 प्रतिशत महिलाएँ गाय का दूध शिशुओं को पिलाने का समर्थन करती हैं, जबकि नगरीय परिवेश की 22 प्रतिशत महिलाएँ माता का दूध, 69 प्रतिशत महिलाएँ ऊपर का दूध तथा 9 प्रतिशत महिलाएँ गाय का दूध पिलाने का समर्थन करती हैं, जो नगरीय और ग्रामीण महिलाओं के दूध पिलाने की आवृत्ति में भिन्नता को स्पष्ट करती हैं।

ग्रामीण व नगरीय स्तनत्याज्य प्रक्रिया के अन्तर्गत यह भी ज्ञात करने का प्रयास किया गया कि स्तनत्याज्य का मुख्य उद्देश्य क्या है। इस प्रश्न के संदर्भ में सर्वेक्षण के दौरान ग्रामीण व नगरीय महिलाओं की आवृत्ति को सारणी संख्या 6 में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी संख्या 6

ग्रामीण व नगरीय स्तनत्याज्य प्रक्रिया

विकल्प	ग्रामीण महिलाओं की आवृत्ति	नगरीय महिलाओं की आवृत्ति
शिशु को बोतल या कटोरी चम्मच से खाने का अभ्यास कराना	30	16
शिशु की जिम्मेदारी से मुक्ति पाना	10	44
शिशु को विभिन्न भोज्य पदार्थो के लिए अभ्यस्त कराना	60	40

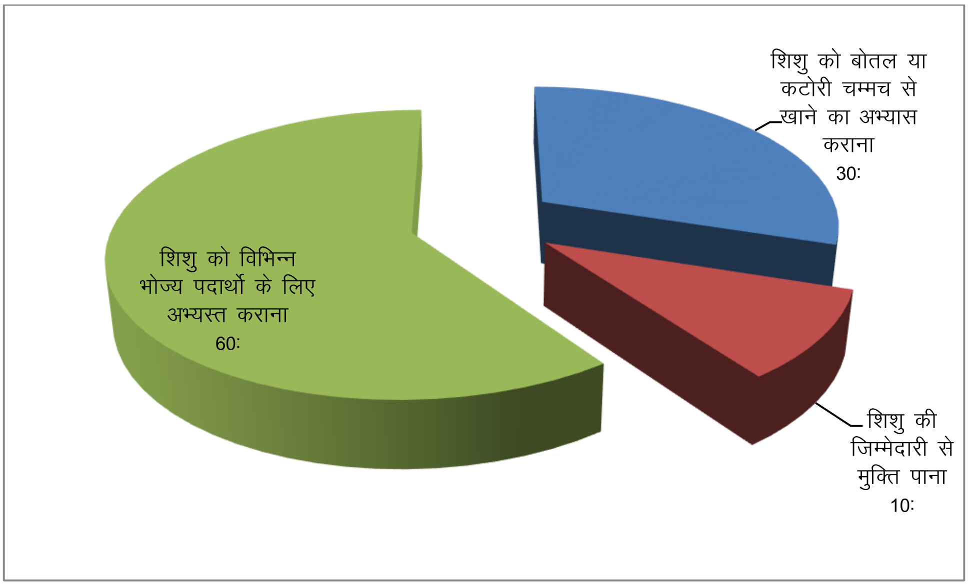

चित्र 6

ग्रामीण व नगरीय स्तनत्याज्य प्रक्रिया

ग्रामीण और नगरी माताओं से सर्वेक्षण के दौरान स्तनत्याज्य के मुख्य उद्देश्य के संदर्भ में प्राप्त आवृत्तियों के संकलित सारणी संख्या 6 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण परिवेश की 30 प्रतिशत महिलाएँ शिशु को बोतल या कटोरी चम्मच से खाने का अभ्यास कराने, 10 प्रतिशत माताएँ शिशु को स्तनपान कराने की जिम्मेदारी से मुक्त होने तथा 60 प्रतिशत महिलाएँ शिशु को विभिन्न भोज्य पदार्थों को ग्रहण करने के लिए अभ्यस्त कराने को स्तनत्याज्य का मुख्य उद्देश्य मानती हैं। जबकि नगरीय परिवेश की 16 प्रतिशत महिलाएँ शिशु को बोतल या कटोरी चम्मच से खाने का अभ्यास कराने, 44 प्रतिशत महिलाएँ शिशु को स्तनपान कराने की जिम्मेदारी से मुक्त होने तथा 40 प्रतिशत महिलाएँ शिशु को विभिन्न भोज्य पदार्थों को ग्रहण कराने में अभ्यस्थ करने के लिए स्तनत्याज्य कराती हैं।

5. निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण और शहरी महिलाओं की शिशु पालन–पोषण पद्धतियों में कई समानताएँ होने के बावजूद, उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के कारण स्पष्ट भिन्नताएँ भी मौजूद हैं। ग्रामीण महिलाएँ प्रायः परंपरागत और अनुभव–आधारित तरीकों पर अधिक निर्भर रहती हैं, जबकि शहरी महिलाएँ आधुनिक चिकित्सा, पोषण संबंधी वैज्ञानिक सलाह और सुविधाओं का अधिक उपयोग करती हैं। शिशु के उत्तरोत्तर शारीरिक विकास के साथ ही मनासिक क्षमताओं का आविर्भाव प्रस्फुटन और विकास होता है। यह विकासकाल ही व्यक्ति के भावी जीवन की पृष्ठभूमि तैयार करता है। आर्थिक रूप से सक्षम परिवारों में शिशु को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ, संतुलित आहार और शैक्षिक संसाधन उपलब्ध कराना अपेक्षाकृत आसान होता है, जबकि सीमित संसाधनों वाले परिवारों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यह अध्ययन संकेत करता है कि शिशु पालन–पोषण में सामाजिक जागरूकता, स्वास्थ्य शिक्षा और संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाना आवश्यक है, ताकि ग्रामीण और शहरी दोनों परिवेशों में शिशु का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जा सके। इस अध्ययन के परिप्रेक्ष्य संदर्भित प्राप्त परिणामों की विवेचना की जा सकती है। बच्चे अधिक ऊर्जावान होते हैं, जिसकी पूर्ति के लिए उन्हें पौष्टिक आहार की आवश्यकता होती है। ऐसे में यदि उन्हें शिशु पालन पद्धतियों के अन्तर्गत उचित पोषणयुक्त आहार न दिया गया तो उनका शारीरिक विकास बाधित होता है, जिससे उनका व्यक्तित्व और सामाजिक उत्थान भी प्रभावित होता है।

सन्दर्भ सूची

- माजगांवकर, सुरभि और करंडे, विशाल और सदावर्ते, दीपिका। (2024)। मुंबई के शहरी स्लम में रहने वाले 6–23 महीने की उम्र के बच्चों के पूरक आहार अभ्यास और पोषण की स्थिति। जर्नल ऑफ प्राइमरी केयर स्पेशलिटीज। 5. 41–45। 10.4103ध्रवचबे.रवचबेत्र्स41त्र्स23।
- वसीम, समीना और खान, रोजिना और शरीफ, सबा। (2023)। 3 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में आहार प्रथाएँ और युवा माताओं के बीच इसका प्रासंगिक ज्ञान। श्र।प्डब्रू जर्नल ऑफ अल्लामा इकबाल मेडिकल कॉलेज। 21. 10.59058ध्रंपउब.अ21प2.130।
- चौहान, रोहित और नैन्सी, और पूनम, पूनम। (2023)। बच्चों के आत्मसम्मान में ग्रामीण भारत की माताओं की पेरेंटिंग शैली की भूमिका। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी। 8. 10. 25215ध1101.062।
- आर्यल, लक्ष्मी और लुकास, अमांडा और युमना, हसीब और धालीवाल, डॉली और रुबीना, गिल। (2023)। शिशु आहार अभ्यासरू एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य। 10.5772ध्पदजमबीवचमद.111430।
- श्मिट, विएबके और केलर, हेइडी और रोसाबल–कोटो, मारियानो और फालस, करीना और गुइलेन, कैरोलिना और डुरान डेलगाडो, एस्टेबन। (2023)। खिलाना, भोजन और लगावरू एक कम आंका गया संबंध?। लोकाचार। 51. 10.1111ध्मजीव.12380।
- हेइदरी, जोहल और गिसांडेनर, ट्रे और सिलोव्स्की, जेन। (2018)। घर–आधारित पेरेंटिंग कार्यक्रमों में ग्रामीण और शहरी परिवारों की भर्ती और उन्हें शामिल करने में अंतर। जर्नल ऑफ रूरल मेंटल हेल्थ। 42. 133–144. 10.1037ध्तउी0000096।
- सारिकम, हकान और हल्मातोव, मेडेरा और हल्मातोव, सुल्तानबर्क और सेलिक, इस्माइल। (2012)। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में रहने वाले परिवारों के बच्चों के पालन–पोषण के दृष्टिकोण की जांच (तुर्की नमूना)। प्रोसीडिया – सामाजिक और व्यवहार विज्ञान। 46. 2772–2776. 10.1016ध्रे.इेचतव.2012.05. 563.
- मिश्रा, आर.सी. और मेयर, बोरिस और ट्रोम्सडॉर्फ, गिसेला और अल्बर्ट, इसाबेल और श्वार्ट्ज, बीट। (2005)। शहरी और ग्रामीण भारत में बच्चों का महत्वरू सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और अनुभवजन्य परिणाम।
- हगुयेन, पीएच, फ्रोगिलो ईए, किम एसएस, जोंग्रोन एए, जिलानी ए, ट्रान एल, एट अल. (2019)। सूचना प्रसार और सामाजिक मानदंड बांग्लादेश में शिशु और छोटे बच्चों के आहार प्रथाओं से जुड़े हैं
- इसानाका, एस, नोम्बेला एन, डिजबो ए. (2009)। नाइजर में 6 से 60 महीने की उम्र के बच्चों की पोषण स्थिति, मृत्यु दर और रुग्णता पर रेडी–टू–यूज चिकित्सीय भोजन के साथ निवारक पूरकता का प्रभाव, श्र।ड।. अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन 2009 जनवरी 21य वॉल्यूम 301(3), पृष्ठ 277. कवपरू 10.1001ध्रंउं.2008.1018.
- हॉर्टन एस, शेखर एस, मैकडोनाल्ड सी, महल ए, ब्रूक्स जेके. (2010). पोषण को बढ़ाने में क्या खर्च आएगा? 2010य ॄवतसकइंदा.वतह.
- नैला, नूरुन और नाहर, बैतुन और लाजरस, मोनिका और रिटर, गेलन और हुसैन, मुत्ताकिना और महफूज, मुस्तफा और अहमद, तहमीद और डेनो, डोना और वाल्सन, जुड और इकेज, स्कॉट। (2017)। ष्जो लोग बहुत परवाह करते हैं, वे बहुत कुछ समझते हैं।ष बच्चों की भूख के बारे में मातृ धारणाएँरू बांग्लादेश में विविध पालन–पोषण के अनुभव के शहरी और ग्रामीण देखभालकर्ताओं के दृष्टिकोण। मातृ और बाल पोषण। 14. म12473. 10.1111ध्उबद.12473.

- जोस, टीना और आर, सुजाता. (2016). मैंगलोर में चयनित सामुदायिक क्षेत्रों में शहरी और ग्रामीण माताओं में शिशुओं के जल्दी दूध छुड़ाने के कारणों पर एक तुलनात्मक अध्ययन. जर्नल ऑफ हेल्थ एंड एलाइड साइंसेज एनयू. 06. 60—67. 10.1055धे—0040—1708677.
- कैकोडकर, जगदीश और जोगलेकर, शिल्पा और दुभाषी, अनघा. (2016). गोवा में ग्रामीण माताओं में स्तनपान और शिशु आहार प्रथाएँ. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्युनिटी मेडिसिन एंड पब्लिक हेल्थ. 184—189. 10.18203ध2394—6040.परबउची20151559.
- सतीजा, महेश और शर्मा, सरित और चौधरी, अनुराग और कौशल, पुष्पापिंद्र और गिरधर, संगीता. (2015). उत्तर भारत के एक ग्रामीण क्षेत्र में शिशु और छोटे बच्चों को खिलाने की प्रथाएँ। एशियन जर्नल ऑफ मेडिकल साइंसेज। 6. 60—65. 10.3126धंरउे.अ6प6.12067.